छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह : श्रावण-भाद्रपद, संवत् 2080
जुलाई+अगस्त 2023 (संयुक्तांक)

ओ३म्

अंक 208, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं "अग्निदूत" परिवार की ओर से स्वतन्त्रता दिवस, रक्षा बंधन एवं श्रावणी पर्व की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं.

डॉ. रामकुमार पटेल
सभा प्रधान
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

अवनीभूषण पुरंग
सभा मंत्री
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

आचार्य जगबन्धु आर्य
सभा कोषाध्यक्ष
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दिनांक 20-8-23 को सभा कार्यालय दुर्ग में सम्पन्न नैमित्तिक साधारण बैठक में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक सदस्यों व अन्य मान्य अतिथियों को सम्मानित किया गया की चित्रमय झलकियाँ

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक सदस्यों को सादर नमन

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - 2080

सृष्टि संवत् - 1,96,08,53,124

दयानन्दाब्द - 199

प्रधान सम्पादक

डॉ. रामकुमार पटेल

प्रधान सभा

(मोबा. 7223835586)

प्रबंध सम्पादक

श्री अवनी भूषण पुरंग

मंत्री सभा

(मोबा. 9893063960)

सहप्रबंध सम्पादक

आचार्य जगबन्धु आर्य

कोषाध्यक्ष सभा

(मोबा. 9770331191)

: सम्पादक :

आचार्य कर्मवीर

मोबा. - 8103168424

पेज सज्जा : श्रीनारायण कौशिक

— कार्यालय पता —

छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्य नगर,

दुर्ग (छ.ग.) 491001

फोन : (0788) 4225499

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क : 100, दसवर्षीय 800

वर्ष - 18, अंक - 9 | ओ३म् | मास/सन् - जुलाई-अगस्त 2023

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयम् ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सझसझकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय सूची

			पृष्ठ क्र.
1.	आत्मन् ! यज्ञ का संचालन करो.	स्व. रामनाथ वेदालंकार	04
2.	नैतिक-युवा ही सच्चे अर्थों में देश के भविष्य हैं.	आचार्य कर्मवीर	05
3.	पदाधिकारियों के परिचय	सम्पादक	08
4.	क्या संसार ऋषि के सत्य वैदिक सिद्धान्तों को समझ पाया है?	डॉ. मनमोहन कुमार आर्य	12
5.	आखिर क्या हैं आजादी के मायने ?	संजय शास्त्री	15
6.	भारत की आंतरिक समस्या-खालिस्तान	सोमेन्द्र सिंह	17
7.	तन्मयता से श्रवण का परिणाम	डॉ. ज्ञानप्रकाश शास्त्री	19
8.	"वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है"	डॉ. अजय आर्य	21
9.	"चिंता को चिंतन से जीते"	आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	24
10.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	अंकित शास्त्री	26
11.	पुण्य स्मरण-बालगंगाधर तिलक	लोकनाथ शास्त्री	28
12.	ईश्वर की व्यापकता	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	29
13.	जयन्ती - स्वामी समर्पणानन्द	स्वामी विवेकानन्द	31
14.	कैसा पानी किस प्रकार पिएं	आचार्य वेदव्रत आर्य	32
15.	समाचार प्रवाह		33

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत

E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – डॉ. रामकुमार पटेल द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

आत्मन् ! यज्ञ का संचालन करो

भाष्यकार – स्व. डॉ. रामनाथवेदालंकार

इमं नो अग्न उप यज्ञमेहि, पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम ।
असो हव्यवाडुत नः पुरोगाः, ज्योगेव दीर्घ तम आशयिष्ठाः ॥

(ऋग. 10-124-1)

ऋषयः अग्निवरुसोमाः । देवता अग्निः । छन्दः त्रिष्टुप ।

(अग्ने) हे आत्मन् ! **(नः)** हमारे **(इमं)** इस **(पञ्चयामं)** पांच यमो से चलने वाले, **(त्रिवृतं)** तीन चक्रोवाले, **(सप्ततन्तुम)** सात ऋत्विजों से फैलाये जाने वाले **(यज्ञं)** यज्ञ को **(उप एहि)** प्राप्त हो । **(हव्यवाट्)** हव्य को वहन करनेवाला **(उत्त)** और (नः) हमारा **(पुरोगाः)** पुरोगामी अध्यक्ष **(असः)** हो । (तू) **(ज्योक् एव)** चिरकाल से ही **(दीर्घतमः)** दीर्घ अन्धकार में **(आ अशयिष्ठाः)** शयन किये हुए हैं ।

हे मेरे आत्मन् ! तू चिरकाल से मोहान्धकार में, तामसिकता की नींद में क्या पड़ा हुआ है ? मानव-जीवन एक यज्ञ है, जिसका तू संचालक है । उस यज्ञ से विमुख होकर तू अंधेरी गुहा में जाकर क्यों सो रहा है ? तू नींद से जाग जा, आ, यज्ञ का पुरोगा बन, यज्ञ का नेतृत्व कर, यज्ञ की अध्यक्षता कर । यह यज्ञ त्रिवृत है, वाल्य, यौवन, वार्द्धक्य इन तीन चक्रों पर घूमने वाला है । ये ही इस यज्ञ के तीन सवन है । उपनिषद् के ऋषि का कथन है कि मनुष्य की आयु के प्रथम चौबीस वर्ष प्रातः-सवन है । इस प्रकार मानव जीवन 116 वर्ष चलनेवाला यज्ञ है । यह यज्ञ पंचयाम है – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पांच यमों से नियन्त्रित होनेवाला है । यह सप्ततन्तु है, सात ऋत्विजों ने फैलाया जानेवाला है । पंच ज्ञानेन्द्रियां, मन और बुद्धि, ये ही इस जीवन-यज्ञ के सात ऋत्विज हैं, जो इसे निरन्तर अविघ्नित रुप से प्रवृत्त रखते हैं । पंच कर्मेन्द्रियां और प्राण-अपान अन्य सात ऋत्विज् हैं, जो इसके विचित्र क्रियाकलापों में सहायक होते हैं । इस यज्ञ में विभिन्न ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां अपने-अपने ज्ञान और कर्म के हव्य को आहूत करती हैं । हे आत्मन् ! तुम हृदयवाट् बनकर उस हव्य का वहन करो, उसे अपने ज्ञान और कर्म का विषय बनाओ । आओ, हे आत्मन् ! तुम्हारे बिना यह यज्ञ अवरुद्ध पड़ा हुआ है । आकर इस यज्ञ का संचालन करो ।

---

1. असः भव । अस् भुवि, लेट । 2. आ शीङ् स्वप्ने, लङ् । 3. छा उप 3.16 ।

सम्पादकीय

नैतिक-युवा ही सच्चे अर्थों में देश के भविष्य हैं

सहृदय पाठकों !

यह आप भलीभांति जानते हैं कि किसी भी समाज जाति व राष्ट्र का वास्तविक उत्थान उसके नागरिकों की सच्चरित्रता में सन्निहित है। सच्चरित्रता ही नैतिकता है, आइए, जानने की कोशिश करते हैं कि आखिर नैतिकता किसे कहते हैं ? पहले यह समझ लेना नितान्त आवश्यक है। नीति-धर्म पर आधारित मानी गई है। आचरण-संहिता, सिद्धान्त, नियम, विधि-शास्त्र आदि ऐसा धरातल प्रदान करते हैं, जिस पर नैतिकता का भवन स्थित है। उचित और अनुचित, स्वकल्याण और अकल्याण, धर्म और अधर्म, कर और मतकर आदि का ज्ञान हमें नीति शास्त्र ही कराता है। इसका प्रमुख मापदण्ड ईमानदारी और औचित्य है। वस्तुतः नैतिकता में वाक् शुचिता के साथ-साथ आचरण-शुद्धि एवं सत्य पर आधारित व्यवहार की बात विशेष महत्वपूर्ण है।

नैतिकता हमें सिखाती है कि हम जातीय विद्वेष पारस्परिक घृणा, सन्देह आदि को समाप्त कर विश्व बन्धुत्व के आदर्श को क्रियात्मक रुप प्रदान करें। एच.जी. वैल्स के शब्दों में - एक मानव समाज का विकास करें। पर आज विद्यार्थी वर्ग अथवा बच्चों में नैतिक मूल्यों का किस सीमा तक ह्रास हुआ है - यह पिछले वर्षों के दौरान हुई, देश के प्रख्यात विश्वविद्यालयों की चार दीवारी से राष्ट्र भक्ति को तार-तार करने वाली षडयंत्रकारी गंदी हरकत से स्पष्ट है। कविवर दिनकर ने इस बात पर कटाक्ष करते हुए आज के विद्यार्थी की बीमार मानसिकता को उजागर करते हुए कहा है -

और छात्र बड़े पुरजोर हैं, कालेजों में सीखने को आये तोड़-फोड़ हैं,
कहते हैं पाप है समाज में, धिक हम पै, जो कभी पढ़े इस राज में,
अभी पढ़ने का क्या सवाल है ? अभी हमारा धर्म एक हड़ताल है।

आज बच्चों में इस प्रकार के नैतिक पतन के लिए किसी एक तत्व को नहीं, अपितु अनेक तत्वों को जिम्मेदार ठहराया जा सकताहै। बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार में, अपने माता-पिता के संरक्षण में रहकर बहुत कुछ सीखता है। उसका अधिकांश समय परिवार के साथ ही व्यतीत होता है। माता को उसका पहला गुरु और पिता को उसका दूसरा गुरु माना गया है। अतः बच्चे के नैतिक-अनैतिक होने

की जिम्मेदारी सर्वप्रथम परिवार की ही है। हमें यहां यह देखना होगा कि क्या परिवार बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान कर रहे हैं, जिनमें संकीर्णता का कोई स्थान न हो, बल्कि सबके प्रति सहानुभूति, प्रेम और उदारता की भावना हृदय में हो। यह सब शिक्षित परिवारों द्वारा ही संभव है। परिवार के पश्चात विद्यालय बच्चे का परिवार बन जाता है। यहां उसका सम्पर्क अध्यापक–पाठ्यक्रम और नये–नये साथियों से होता है।

इस प्रसंग में यह बात विशेष रुप से विचारणीय है कि शिक्षा नीति से पहले अध्यापक, जो बच्चों के लिए मित्र दार्शनिक और मार्गदर्शक हैं, अगर वह अपने इन गुणों को भुलाकर, आदर्शों को तिलांजलि देकर पतित हो जाए, तो फिर बच्चों की नैतिकता को खोजना गूलर के फूल के समान ही रहेगा। आज यदि शिक्षा–नीति पर भी ध्यान दें तो दुर्भाग्य से आज की शिक्षा प्रणाली भी पुस्तकीय, लड़खड़ाती हुई और अपूर्ण है। आज का विद्यार्थी वर्ग जीवन से निराश है, वह कुंठा और संत्रास का जीवन जीता हुआ, भौतिक सुख को ही सच्चा सुख मान बैठा है। उसके लिए उसका परम लक्ष्य डिग्री प्राप्त कर, कोई कुर्सी वाली नौकरी प्राप्त करना मात्र रह गया है। उसके पास भविष्य के लिए कोई योजना नहीं है। भावी जीवन की कोई रुपरेखा नहीं है। वह हर कहीं कमियां तो निकाल सकता है, पर अपने ठोस सुझाव नहीं दे सकता। वह पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग कर अपनी सभ्यता और संस्कृति को दिन–प्रतिदिन भूलता जा रहा है। आज हिप्पी बनने का चाव उसमें जोरों से जाग रहा है, जबकि हमारा नैतिक आदर्श तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में इस प्रकार है –

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिये जीते न थे, वे स्वार्थ–रत हो, मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार में उपकार हित, जब जन्म लेते थे कभी, निश्चेष्ट होकर किस तरह, वे बैठ सकते थे कभी॥

सन् 1964–66 की शिक्षा–आयोग की रिपोर्ट में कहा गया था कि आधुनिकता के मार्ग पर जाने की इच्छा रखने वाले पारस्परिक समाजों को पहले अपनी शिक्षा व्यवस्था को बदलना चाहिए, क्योंकि शिक्षा का पारस्परिक ढांचा जितना अधिक व्यापक होता जाएगा, उसे बदलना उतना ही मुश्किल और महंगा होता जाएगा और आगे चल कर हुआ भी ऐसा ही। धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा की अवहेलना करने से विद्यार्थी–असंतोष कम नहीं हुआ। वे अपने कर्तव्यों को भुलाकर अधिकारों को प्राप्त करने की दौड़–धूप में लगे हुए हैं। अतः विद्यार्थियों को रोजगार और विज्ञान की शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का दिया जाना वर्तमान समय में अनिवार्य होना चाहिए। यह संतोष का विषय है कि वर्तमान सरकार जो नई शिक्षा नीति लेकर आ रही है, उसके प्रस्तावों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह नैतिक व सामाजिक सरोकारों को लिए हुए एक व्यावहारिक युगानुरुप सशक्त समाज के निर्माण में काफी हद तक सहायक सिद्ध होगा। नम्बर की दौड़ वाली गलाकाट स्पर्धा कम होकर एक स्वस्थ वातावरण को जन्म देगी। इससे उसमें दैवी गुण अपना चमत्कार दिखा सकेंगे। नैतिक शिक्षा के मामले में भारत सरकार केबाद सबसे बड़े शैक्षिक संगठन डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान अपने हजारों विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को धर्म शिक्षा पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य विषय बनाये जाने पर गंभीरता से काम कर रहे हैं। इसके सुखद एवं चमत्कारिक परिणाम गत 144 वर्षों से पूरे देश एवं विदेश में डी.ए.वी. की उपलब्धियों से सहज अनुमान लगाया जा सकता है। पिछले दिनों डी.ए.वी. संस्थान से ही पढ़कर निकले झारखण्ड, बिहार एवं उड़ीसा के चार युवा वैज्ञानिक भी इसरो टीम में चन्द्रयान–3 अभियान की सफलता में शामिल रहे जिन्होंने अपनी सहभागिता दर्ज की यह कम गर्व की बात आर्यजगत के लिए नहीं है।

यह हर्ष का विषय है कि भारत में भी शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जा रहा है। कुछ प्रान्तों ने तो विगत कुछ वर्षों से अपने यहां के विद्यालयों और महाविद्यालयों में इसकी व्यवस्था भी कर ली है। यह इस देश का दुर्भाग्य है कि आजादी के सात दशक बीतने के बाद भी वही शिक्षा पद्धति जिसे मैकाले ने गुलाम मुल्क में गुलामी कराने की मानसिकता से शुरुआत की थी उसे अभी तक हम पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित करते चले जा रहे हैं ऊपर से नोबल प्राइज विजेता नागरिक

सपना देखते हैं जो कि असम्भव ही है। कुछ राजनीतिक दल तथा जातीय संगठन भी अपने गलत स्वार्थ, अन्ध साम्प्रदायिकता एवं कठोर कट्टरवादिता जैसे बुराईयों को लेकर चलते हैं। वे बच्चों को कठपुतली बनाकर अपने संकेतों पर, अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु मनोवांछित रुप से नचाते हैं। अतः आज समाज में घुन की भांति लगे भ्रष्टाचार के नानाविध रुपों को निर्मूल करने के लिए क्रान्ति का लाया जाना अपेक्षित है। बच्चा तभी अनैतिकता की दल-दल में फंसने से बच सकता है। दृश्य-श्रव्य उपकरणों, जैसे-सिनेमा, रेडियो, वीडियो, दूरदर्शन, नाटक आदि भी बच्चों में अनैतिकता को प्रश्रय देते हैं। आजकल व्हाट्सअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे न जाने कितने ही बरबादी के माध्यम नई पीढ़ी को अपने आगोश में निरन्तर कसते चले जा रहे हैं। इन्टरनेट का अथाह संसार उन्हें पथभ्रष्ट करने में ही अधिक कारगर हुआ है। दिल्ली के निर्भया काण्ड को अंजाम देने वाले दरिंदों ने मोबाइल का गलत प्रयोग को स्वयं स्वीकारा था। आजकल ऐसे चलचित्रों, गानों और कथा कहानियों, संवादों को प्रसारित व प्रदर्शित किया जाता है जिनका दुष्प्रभाव बच्चों के अपरिपक्व मन-मस्तिष्क पर पड़ता है और वे पथभ्रष्ट हो जाते हैं। इसके लिए आवश्यक होगा कि बच्चों की मानसिकता को ध्यान में रखकर चलचित्रों, गानों, कथा-कहानियों, संवादों आदि की रचना की जाए, जिससे कि बच्चा एक आदर्श ग्रहण कर सके और देश के लिए उत्तम नागरिक सिद्ध हो सके। यदि बच्चे की संगति अच्छी होती है तो वह अच्छी-अच्छी बातें ही ग्रहण करेगा। और यदि कहीं वह कुसंगति में पड़ गया तो समझो उसका सर्वनाश ही हो गया। क्योंकि कुसंगति तो बच्चे को अनैतिक बनाकर उसकी पाश्विक प्रवृत्तियों को ही जगाती है। इसलिए यह परम आवश्यक है कि बच्चे को कुसंगतियों की हानियों को प्रेमपूर्वक समझा कर उसे सुसंगति में विचरने के सुअवसर प्रदान किये जाने चाहिए क्योंकि मनुष्य एकान्त में तो ज्ञान प्राप्त करता है और नैतिकता सुसंगति में ही प्राप्त करता है।

अतः बच्चे को नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए उत्तम पुस्तकों और सही पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था घरों तथा विद्यालयों में मुख्य रुप से की जानी चाहिए। विद्यालयों में इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वहां के पुस्तकालयों का सही अर्थों में उपयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि पुस्तकें सच्ची मित्र, मार्गदर्शक और ज्ञान का भंडार होती है। अच्छी पुस्तकें पढ़ने पर बच्चा स्वयमेव नैतिक बनता जाएगा। कुछ लोग विद्यालयों में धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा देने का विरोध करते हैं। उनका कहना है कि भारत एक धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र है। यहां हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी तथा अन्य जातियों के लोग बसते हैं और इनके बच्चे विद्यालयों में पढ़ते हैं। ऐसे में धार्मिक शिक्षा देने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि किसी धर्म के सिद्धान्त कुछ और है और किसी के कुछ और, इस दृष्टि में किसी धर्म की पूजा पद्धति अथवा धर्म-ग्रन्थों को विद्यार्थियों पर थोपना सरासर अन्याय होगा। अन्य धर्म भी इसको गंवारा नहीं करेंगे और न ऐसा करने की अनुमति ही देंगे।

इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि धर्म का अर्थ है - धारण करना। जैसा पहले भी बताया जा चुका है कि जो-जो बातें अच्छी हों, सर्वहितकारी हों, सार्वभौमिक हों, जिन्हें सभी धर्म एक समान मानते हों, जिनमें संकोच न हों, और जो मानव रक्षा तथा समाज की तात्कालिक समस्याओं को हल करने में सहयोगी हों, उन्हें धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का विषय सहज ही बनाया जा सकता है। इससे एक ओर तो विद्यार्थी वर्ग अनुशासित और संयमी जीवन के प्रति जागरुक होकर नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देगा और दूसरी ओर इन विभिन्न धर्मों के प्रति उसके मन में निष्ठा पनपेगी। इसे हम सर्व-धर्म-समन्वय की भावना कहेंगे। अतएव धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा किसी एक धर्म अथवा जाति से संबंधित न होकर सभी धर्म एवं जातियों से संबंधित होनी चाहिए। सभी धर्मों एवं जातियों के विद्यार्थियों में सर्व-धर्म-समन्वय की भावना के साथ-साथ मानव-धर्म के गुण धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा से ही विकसित हो सकते हैं। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि कल का भारत सच्चे अर्थों में अपने पूर्व गौरव को प्राप्त करें तो सभी मिलजुलकर नैतिकता को नई पीढ़ी के जीवन में आत्मसात् कराएँ, अन्य कोई मार्ग नहीं।

- आचार्य कर्मवीर

परिचय

डॉ. रामकुमार पटेल
सभा प्रधान
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

- **जन्म** – 8-7-1959
- **प्रारंभिक शिक्षा** – प्राथमिक शाला, पंचपारा हाईस्कूल पुसौर, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)
- **चिकित्सकीय शिक्षा** – डी.एच.बी. होमियोपैथी मेडिकल कॉलेज, बिलासपुर (छ.ग.)
- **सेवाकार्य** – 1979 से 1990 तक संबलपुर (उड़ीसा) एवं 1991 से रायगढ़ छ.ग. में अब तक निरन्तर।
- **उपलब्धि** – 2007 में होमियोपैथी चिकित्सा एक्सीलेंट अवार्ड उज्जैन (म.प्र.) द्वारा प्राप्त।
- **आर्यसमाज से जुड़ाव** – 1971 में आचार्य विश्वामित्र भारद्वाज एक यायावर ब्रह्मचारी द्वारा उड़ीसा से आकर ग्राम सुकुलभटली में सामवेद पारायण महायज्ञ कर पूज्य पिता श्री भगतराम पटेल को प्रेरित कर 13 वर्षीय रामकुमार को यज्ञोपवीत की दीक्षा के साथ वैदिक संस्कारों में अनुप्राणित किया गया। तब से गांव में प्रतिदिन सायंकाल दैनिक संध्या की परिपाटी निर्वाध गति से अद्यावधि संचालित है।
- **आर्यसमाज में सक्रिय** – 1991 में गृहग्राम सुकुलभटली में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ (पांच दिवसीय) के साथ आर्यवीर दल का शिविर संचालन कर क्षेत्र में वेद प्रचार का शुभारम्भ साथ ही सैकड़ों युवाओं को आर्यवीर दल के माध्यम से जोड़कर नानाविध ग्राम विकास योजनाओं में सहभागी बनाते हुए प्रतिवर्ष खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हुए निरन्तर युवा शक्ति निर्माण में योगदान। 1994 में रायगढ़ की धरती पर ऐतिहासिक विशाल आर्य सम्मेलन, पारायण यज्ञ एवं आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर आर्य कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से बड़े भव्य रुप से सफल करने में भूमिका निभाई। गुरुकुल तुरंगा एवं आर्यवीर दल छत्तीसगढ़ के संचालक के माध्यम से प्रतिवर्ष प्रचारात्मक गतिविधियाँ एवं युवा चरित्र निर्माण में प्रयत्नशील।
- **वर्तमान** – विगत दिनों सम्पन्न छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन में सभा "प्रधान" पद पर निर्वाचित प्रान्त में सभा को सशक्त समृद्ध व समाजोपयोगी बनाकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को चरितार्थ करने की अपेक्षाएँ आप से आर्य जनता को है।

– *सम्पादक*

अवनीभूषण पुरंग
सभा मंत्री
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा

परिचय

- **जन्म** – 9 फरवरी 1951
- **परिवार – पिता–** स्व. श्री देवीदयाल पुरंग, रावलपिंडी, एबटाबाद, लाहौर, शिमला में आर्य समाज की सेवा। आर्य प्रतिनिधि म.प्र. एवं विदर्भ के वर्षों तक उपप्रधान रहे।
  – माता जी– स्व. श्रीमती गार्गीदेवी पुरंग, जीवनपर्यन्त आर्यसमाज का काम किया। कौशल्या माता जी के साथ कई कार्यकर्मों में शामिल हुई। आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया। आर्यसमाज सेक्टर–6 में प्रधान पद को सुशोभित किया।
  – बड़े भ्राता – डॉ. भारतभूषण विद्यालंकार, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समपर्णानन्द जी) एवं पं. इन्द्र जी वाचस्पति के शिष्य/सहयोगी, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान, हिन्दी रिसर्च इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर, हिन्दी–अंग्रेजी, हिन्दी–संस्कृत एवं अंग्रेजी–जर्मन भाषाओं की डिक्शनरियों के सम्पादक तथा वैदिक पत्रिका ब्रहसा के सम्पादक रहे।
- **उच्च शिक्षा** – इंजीनियरिंग
- **आजीविका – 1972–** भिलाई इस्पात संयंत्र में प्रशिक्षु इंजीनियर। **2006–**महाप्रबंधक का पदभार। **2009–** महाप्रबंधक प्रभारी, (अधीनस्थ– 5 महाप्रबंधक एवं 3750 कर्मचारी)। **2011–** भिलाई इस्पात संयंत्र से सेवानिवृत्त। **2012–** भिलाई इंजीनियरिंग कार्पोरेशन में वाईस प्रेसीडेंट। **2014–** जिंदल स्टील – मंदिर हसौद, रायपुर में फाऊंड्री–कारखाना प्रभारी।
- **पुरस्कार एवं उपलब्धियां – 1984 –** अखिल भारतीय – राष्ट्रीय युवा धातुकर्मी पुरस्कार। **1979, 1982 –** भिलाई इस्पात संयंत्र का शीर्ष पुरस्कार दो बार। **2001–** प्रधानमंत्री जी का राष्ट्रीय विश्वकर्मा पुरस्कार। तकनीकी गोष्ठियों में आठ, शोध–पत्र प्रस्तुत किये। **2009–** विश्व फाउंड्री कान्फ्रेंस हैंग्झू–चीन में शोध–पत्र प्रस्तुत किया, जिसकी बहुत प्रशंसा हुई।
- **आर्यसमाज से जुड़ाव** – पंजाब क्षेत्र को आर्यसमाज के पल्लवित पुष्पित एवं फलित होने का सबसे अधिक श्रेय जाता है। पंजाब से ही महात्मा

हंसराज, लाला लाजपत राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द इत्यादि आर्यसमाज के प्रथम पीढ़ी के महापुरुष जिन्होंने भारतीय नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के संकल्पों, संघर्षों, त्याग, तपस्या एवं बलिदानों को मूर्त्त रुप देने में अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया ऐसे तपःपूत बलिदानी परम्परा के अग्रदूत शास्त्रार्थ महारथी जिनका नाम सुनकर पौराणिक मंडली थरथर कांप उठती थी, ऐसे स्वामी श्रद्धानन्द के महान शिष्य पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार (संन्यास उपरान्त स्वामी समर्पणानन्द) जी के करकमलों से यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुआ। आचार्य जी का परिवार में सतत आना-जाना होने से सभी वैदिक संस्कार विरासत में प्राप्त हुए। विवाहोपरान्त आर्य परिवार से संबंध जुड़ने पर आर्य सामाजिक गतिविधियों में छात्र जीवन से ही सक्रिय रहे। भिलाई में आर्यसमाज मंदिर के अभाव में कई वर्षों तक परिवार को ही आर्यसमाज बनाकर निरन्तर सत्संग, यज्ञ एवं संस्कार करते रहे। आर्य समाज भवन बन जाने के बाद प्रतिवर्ष वेद पारायण यज्ञों की श्रृंखला देश के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, साधु, संत, प्रतिष्ठित महापुरुष दिसम्बर के माह में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आर्यवीर दल के शिविर, बाल संस्कार शाला, वैदिक धर्म प्रतिस्पर्धा, चित्रकला स्पर्धा, भाषण स्पर्धा विविध विषयों में विशेषज्ञों को बुलाकर अनेक समाज उत्थानपरक संगोष्ठियों का आयोजन, आर्यसमाज भिलाई के समय-समय पर महत्वपूर्ण पदों की शोभा को बढ़ाते हुए नगर में सेवा क्षेत्र में भी अनगिनत योगदान दिया।

- 2008, 2018- आर्य समाज सेक्टर-6, भिलाई का प्रधान।
- 2022 - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा में मंत्री पद।

● **वर्तमान** - विगत दिनों सम्पन्न छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन में "मंत्री" पद पर निर्वाचित, लम्बे काल खण्डों तक भिलाई स्टील प्लांट के प्रशासनिक पदों में व्यवस्था नियंत्रण एवं प्रबन्ध संचालन का आपका कुशल अनुभव सभा को प्राप्त होगा, सभा के उज्ज्वल भविष्य की आपसे आशाएँ हैं।

– सम्पादक

देश की आजादी में महर्षि दयानन्द का योगदान

परिचय

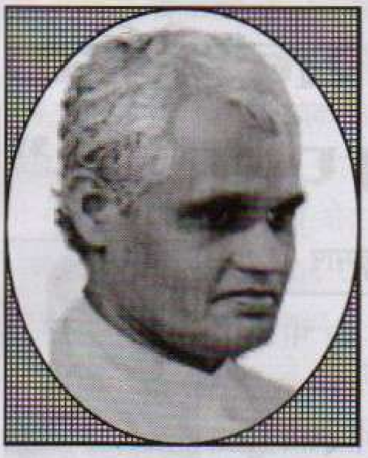

आचार्य जगबन्धु आर्य
सभा कोषाध्यक्ष
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा

- जन्म – 7-6-1973
- **प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा** – गृह ग्राम सलखिया एवं राजपुर, जिला रायगढ़ (छ.ग.)
- **उच्च शिक्षा** – पूर्व मध्यमा से व्याकरणाचार्य पर्यन्त अछूतोद्धारक इतिहास पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर स्वप्न शुद्धि आन्दोलन को जीवन्त रुप प्रदान करने वाले लाखों लोगों को घर वापसी के माध्यम से हिन्दू (आर्य) धर्म में दीक्षित करने वाले पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के पावन चरणों में वेद वेदांगों का अध्ययन किया। अनेक वर्षों तक अध्यापन कार्य भी गुरुकुल भूमि में करने का सौभाग्य प्राप्त किया।
- **उपलब्धि** – गुरुकुलीय शिक्षा समाप्ति के बाद पूज्य पिता श्री उजलोराम जी आर्य द्वारा जो कि गुरुकुल वेद व्यास पानपोस राऊरकेला के संस्थापक पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी की प्रेरणा से पहले ही अनुप्राणित थे। बाद में पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी का स्नेह सहयोग मिला, जिसके कारण अपनी ही भूमि पर वैदिक धर्म की उन्नति के लिए शिक्षा को सोपान समझकर गुरुकुल खोलने की भीष्म प्रतिज्ञा ली। स्वयं उच्च शिक्षित न होते हुए केवल वैदिक संस्कारों के प्रभाव से अपने संकल्प को न केवल मूर्त्तरुप प्रदान किया, प्रत्युत अपने जीवन काल में ही देश के मानचित्र में दयानन्द वैदिक आश्रम गुरुकुल सलखिया को आदिवासी वनवासी क्षेत्र में एक नूतन संकल्पना के रुप में साकार कर दिया। कार्यक्षेत्र पहले से ही तैयार था। अतः गुरुकुल के छात्रों में वैदिक धर्म के संस्कारों का बीजवपन, शिक्षण व प्रशिक्षण के माध्यम से सतत प्रयत्नशील समय-समय पर वार्षिक समारोहों के आयोजन छात्र-छात्राओं में चारित्रिक उत्थानपरक शिविरों का आयोजन क्षेत्र में पारिवारिक यज्ञों एवं सत्संगों द्वारा निरन्तर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार, देश के अन्य प्रान्तों में भी वेद प्रचारार्थ नियमित प्रवास।
- **वर्तमान** – विगत दिनों सम्पन्न छत्तीसगढ़ प्रानतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन में "कोषाध्यक्ष" पद पर निर्वाचित प्रान्त में सभा के कोश का संरक्षण व संवर्धन के साथ-साथ वेद प्रचार के क्षेत्र में उचित समायोजन की अपेक्षा आपसे आर्यजनों को है। **– सम्पादक**

वैचारिक

"क्या संसार ऋषि के सत्य वैदिक सिद्धान्तों को समझ पाया है ?"

- डॉ. मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द (1825-1883) ने देश व समाज सहित विश्व की सर्वांगीण उन्नति का धार्मिक व सामाजिक कार्य किया है । क्या हमारे देश और संसार के लोग उनके कार्यों को यथार्थ रुप में जानते व समझते हैं ? क्या उनके कार्यों से मनुष्यों को होने वाले लाभों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान विश्व व देश के लोगों को हैं? जब इन व ऐसे अन्य कुछ प्रश्नों पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि हमारे देश व संसार के लोग ऋषि दयानन्द उनकी वैदिक विचारधारा और सिद्धान्तों के महत्व के प्रति अनभिज्ञ व उदासीन हैं । यदि वह जानते होते तो उससे लाभ उठा कर अपना कल्याण कर सकते थे । न जानने के कारण वह वैदिक विचारधारा से होने वाले लाभों से वंचित हैं और नानाविध हानियां उठा रहे हैं । अतः यह विचार करना समीचीन है कि मनुष्य महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा के सत्य व यथार्थ स्वरुप को क्यों नहीं जान पाये ? इस पर विचार करने पर हमें इसका उत्तर यही मिलता है कि महर्षि दयानन्द के पूर्व व बाद में प्रचलित मत-मतान्तरों के आचार्यों व तथाकथित धर्मगुरुओं ने अविद्या एवं हिताहित को सामने रखकर उनका विरोध किया और उनके बारे में मिथ्या प्रचार करके अपने-अपने अनुयायियों को उनके व उनकी विचारधारा को जानने व समझने का अवसर व स्वतन्त्रता प्रदान नहीं की । आज भी संसार के अधिकांश लोग मत-मतान्तरों के सत्यासत्य मिश्रित विचारों व मान्यताओं से बंधे व उसमें फंसे हुए हैं। सत्य से अनभिज्ञ व अज्ञानी होने पर भी उनमें ज्ञानी होने का मिथ्या अहंकार है । रुढ़िवादिता के संस्कार भी इसमें मुख्य कारण हैं । इन मतों व इनके अनुयायियों में सत्य-ज्ञान व विवेक का अभाव है जिस कारण वह भ्रमित व अज्ञान की स्थिति में होने के कारण यदि आर्यसमाज के वैदिक विचारों व सिद्धान्तों का नाम सुनते भी हैं तो उसे संसार के मत-मतान्तरों व अपने मत-सम्प्रदाय का विरोधी मानकर उससे दूरी बनाकर रखते हैं ।

महर्षि दयानन्द का मिशन क्या था ? इस विषय पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वह संसार के धार्मिक, सामाजिक व देशोन्नति संबंधी असत्य विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों को पूर्णतः दूर कर सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों को प्रतिष्ठित करना चाहते थे । इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने पिता का घर छोड़ा था और सत्य की प्राप्ति के लिए ही वह एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक विद्वान् के बाद दूसरे विद्वान की शरण में सत्य ज्ञान की प्राप्ति हेतु जाते गये और उनसे उपलब्ध ज्ञान प्राप्त कर प्राप्त होने वाले सभी अर्वाचीन व प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन भी करते रहे । अपनी इसी धुन व उद्देश्य के कारण वह अपने समय के देश के सभी बड़े विद्वानों के सम्पर्क में आये, उनकी संगति की और उनसे जो विद्या व ज्ञान प्राप्त कर सकते थे, उसे प्राप्त किया और उसके साथ ही योगी गुरुओं से योग सीख कर सफल योगी बने । उनकी विद्या की पिपासा मथुरा में स्वामी विरजानन्द सरस्वती की पाठशाला में सन् 1860 से सन् 1863 तक के लगभग 3 वर्षों तक वेदांग ग्रन्थों अष्टाध्यायी, महाभाष्य तथा निरुक्त पद्धति

से संस्कृत व्याकरण का अध्ययन करने के साथ गुरुजी से शास्त्र चर्चा कर अपनी सभी भ्रान्तियों को दूर करने पर समाप्त हुई। वेद वैदिक साहित्य का ज्ञान और योग विद्या सीखकर वह अपने सामाजिक दायित्व की भावना व गुरु की प्रेरणा से कार्य क्षेत्र में उतरे और सभी मतों के सत्यासत्य को जानकर उन्होंने विश्व में धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में असत्य व मिथ्या मान्यताओं तथा भ्रान्तियों को दूर करने के लिए सत्य मान्यताओं व परम्पराओं का मण्डन तथा असत्य बातों का खण्डन किया। प्रचलित धर्म-मत-मतान्तरों में जो सत्य था उसका उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से मण्डन व समर्थन किया। आज यदि हम स्वामी दयानन्द व आर्यसमाज के किसी विरोधी से पूछें कि महर्षि दयानन्द ने तुम्हारे मत की किस सत्य मान्यता वा सिद्धान्त का खण्डन किया तो उसका उत्तर किसी मत-मतान्तर वा उसके अनुयायी के पास नहीं है। इसका कारण ही यह है कि ऋषि दयानन्द ने सत्य का कभी खण्डन नहीं किया। उन्होंने तो केवल असत्य व मिथ्या ज्ञान का ही खण्डन किया है जो कि प्रत्येक मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य वा धर्म है।

दूसरा प्रश्न है कि यदि अन्य मत वालों से यह कहें कि क्या स्वामी दयानन्द जी ने वेद संबंधी अथवा अपने किसी असत्य व मिथ्या विचार व मान्यता का प्रचार किया हो तो बतायें ? इसका उत्तर भी किसी मत के विद्वान्, आचार्य व अनुयायी से प्राप्त नहीं होगा। अतः यह सिद्ध तथ्य है कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में कभी किसी मत के सत्य सिद्धान्त का खण्डन नहीं किया और न ही असत्य व मिथ्या मान्यताओं का प्रचार किया। उन्होंने केवल असत्य बातों व परम्पराओं का ही खण्डन और सत्य का मण्डन किया जो कि मनुष्य जाति की उन्नति के लिए सभी मनुष्यों व मत-मतान्तरों के आचार्यों को करना अभीष्ट है। इसका मुख्य कारण यह है कि सत्य वेद धर्म का पालन करने से मनुष्य का जीवन अभ्युदय को प्राप्त होता है और इसके साथ वृद्धावस्था में मृत्यु होने पर जन्म-मरण के बन्धन से छूट कर मोक्ष प्राप्त होता है।

यह भी विचार करना आवश्यक है कि सत्य से लाभ होता है या हानि और असत्य से भी क्या किसी को लाभ हो सकता है अथवा सदैव हानि ही होती है? वेदों के ज्ञान के आधार पर सत्य के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द ने एक नियम बनाया है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यह नियम संसार में सर्वमान्य नियम है। अतः सत्य से लाभ ही लाभ होता है, हानि किसी की नहीं होती। हानि तभी होगी यदि हमने कुछ गलत किया हो। अतः मिथ्याचारी व्यक्ति व मत-सम्प्रदाय के लोग ही असत्य का सहारा लेते हैं और सत्य से डरते हैं। ऐसे मिथ्या मतों, उनके अनुयायी व प्रचारकों की मान्यताओं के खण्डन के लिए महर्षि दयानन्द को गलत नहीं कहा जा सकता। इस बात को कोई स्वीकार नहीं करता कि मनुष्य को जहां आवश्यकता हो वहां वह असत्य का सहारा ले सकता है और जहां सत्य से लाभ हो वहीं सत्य का आचरण करे। किसी भी परिस्थिति में असत्य का आचरण अनुचित, अधर्म वा पाप ही कहा जाता है। अतः सत्याचरण करना ही धर्म सिद्ध होता है और असत्याचरण अधर्म। महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इन ग्रन्थों में उन्होंने मनुष्य के धार्मिक व सामाजिक कर्त्तव्यों व अकर्त्तव्यों का वैदिक प्रमाणों, युक्ति व तर्क के आधार पर प्रकाश किया है। सत्यार्थप्रकाश साधारण मनुष्यों की बोलचाल की भाषा हिन्दी में लिखा गया वैदिक धर्म का सर्वांगीण महत्वपूर्ण व प्रभावशाली धर्मग्रन्थ है। धर्म व इसकी मान्यताओं का संक्षिप्त रुप महर्षि दयानन्द ने पुस्तक के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश लिखकर प्रकाशित किया है। यह स्वमन्तव्यामन्तव्य ही मनुष्यों के यथार्थ धर्म के सिद्धान्त व कर्त्तव्य है जिनका विस्तृत व्याख्यान सत्यार्थ प्रकाश व उनके अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध है। उनके स्वमन्तव्यामन्तव्य की यह सभी मान्यतायें संसार के सभी मनुष्यों के लिए धर्मपालनार्थ माननीय व आचरणीय

है परन्तु अज्ञान व अन्धविश्वासों के कारण लोग इन सत्य मान्यताओं से अपरिचित होने के कारण इनका आचरण नहीं करते और न उनमें सत्य मन्तव्यों को जानने की सच्ची जिज्ञासा ही है । इसी कारण संसार में मत–मतान्तरों का अस्तित्व बना हुआ है । इसका कारण यह भी है कि देश व संसार में धर्म संबंधी सत्य और यथार्थ ज्ञान के संगठित प्रचार वा प्रचारकों की कमी है। यदि ये पर्याप्त संख्या में होते और अन्य मतावलम्बियों की तरह साधारण लोगों में प्रचार करते, तो देश और विश्व का चित्र वर्तमान से कहीं अधिक उन्नत व सन्तोषप्रद होता ।

महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 से वेद वा वैदिक मान्यताओं का प्रचार आरम्भ किया था जिसने 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के बाद तेज गति पकड़ी थी । इसके बाद सन् 1883 तक उन्होंने वैदिक मान्यताओं का प्रचार किया जिसमें वैदिक मत के विरोधियों व विधर्मियों से शास्त्र चर्चा, विचार विनिमय, वार्तालाप और शास्त्रार्थ सम्मिलित थे। अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना सहित ऋग्वेद का आंशिक और पूरे यजुर्वेद का उन्होंने भाष्य किया । उनके बाद उनके अनेक शिष्यों ने चारों वेदों का भाष्य पूर्ण किया। न केवल वेदों पर अपितु दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण व महाभारत आदि पर भी भाष्य, अनुवाद, ग्रन्थ व टीकायें लिखी गई । संस्कृत व्याकरण विषयक भी अनेक नये ग्रन्थों के साथ प्रायः सत्यार्थप्रकाश सहित सभी आवश्यक ग्रन्थों को अनेक भाषाओं में अनुवाद व सुसम्पादित कर प्रकाशित किया गया, जिससे संस्कृत अध्ययन सहित आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करना अनेक भाषा–भाषी लोगों के लिए सरल हो गया । एक साधारण हिन्दी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन कर सकता है । यह सफलता महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज व इसके विद्वानों की देश व विश्व को बहुमूल्य देन है। यह सब कुछ होने पर भी आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा का विश्व के लोगों पर जो प्रभाव होना चाहिये था वह नहीं हो सका । इसके प्रमुख कारणों को हमने लेख के आरम्भ में प्रस्तुत किया है । वह यही है कि देश व संसार के लोग महर्षि दयानन्द की मानवमात्र की कल्याणकारी विचारधारा व उनके यथार्थ भावों को अपनी–अपनी अविद्या, स्वार्थ, हठ और पूर्वाग्रहों वा दुराग्रहों के कारण जान नहीं सके । कुछ अन्य और कारण भी हो सकते हैं । इसके लिए आर्यसमाज को अपने संगठन व प्रचार आदि की न्यूनताओं पर भी ध्यान देना होगा और उन्हें दूर करना होगा । वेद व धर्म प्रचार को बढाना होगा और वैदिक मान्यताओं को सारगर्भित व संक्षेप में लघु पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत कर उसे घर–घर पहुंचाना होगा । यदि प्रचारकों की संख्या अधिक होगी और संगठित रुप व समर्पित भाव से प्रचार किया जायेगा तो सफलता मिलेगी जिससे मानवता का कल्याण निश्चय ही होगा ।

पता : 196, चुक्खूवाला –2, देहरादून 248001

"अग्निदूत" के सुधी पाठकों के लिए

आवश्यक सूचना

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की हिन्दी मासिक पत्रिका "अग्निदूत" के **माह जून 2023** अंक का प्रकाशन किन्हीं अपरिहार्य कारणों से नहीं हो सका है, जिसका हमें खेद है । "अग्निदूत" पत्रिका का आगामी अंक माह **जुलाई व अगस्त 2023 (संयुक्तांक)** आपके हाथों में है ।

– सम्पादक

स्वातन्त्र्य पर्व

आखिर क्या है आजादी के मायने ?

आजादी कहें या स्वतन्त्रता ये ऐसा शब्द है जिसमें पूरा आसमान समाया है । आजादी एक स्वाभाविवक भाव है या यूँ कहें कि आजादी की चाहत मनुष्य को ही नहीं जीव-जन्तु और वनस्पतियों में भी होती है । सदियों सेभारत अंग्रेजों की दासता में था, उनके अत्याचार से जन-जन त्रस्त था । खुली फिजा में सांस लेने को बेचैन भारत आजादी का पहला बिगुल 1857 में बजा किन्तु कुछ कारणों से हम गुलामी के बंधन से मुक्त नहीं हो सके । वास्तव में आजादी का संघर्ष से मुक्त नहीं हो सके । वास्तव में आजादी का संघर्ष तब अधिक हो गया जब बालगंगाधर तिलक ने कहा कि स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है । अनेक क्रान्तिकारियों और देशभक्तों के प्रयास तथा बलिदान से आजादी की गौरव गाथा लिखी गई है । यदि बीज को भी धरती में दबा दें तो वो धूप तथा हवा की चाहत में धरती से बाहर आ जाता है क्योंकि स्वतन्त्रता जीवन का वरदान है । व्यक्ति को पराधीनता में चाहे कितना भी सुख प्राप्त हो किन्तु उसे वो आनन्द नहीं मिलता जो स्वतन्त्रता में कष्ट उठाने पर भी मिल जाता है । तभी तो कहा गया है कि - पराधीन सपने हूँ सुख नाही ।

जिस देश में चन्द्रशेखर, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, सुभाषचन्द्र, खुदीराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी तथा तिलक, पटेल जैसे देशभक्त मौजूद हों उस देश को गुलाम कौन रख सकता था । आखिर देशभक्तों के महत्वपूर्ण योगदान से 14 अगस्त की अर्धरात्रि को अंग्रेजों की दासता एवं अत्चाचार से हमें आजादी प्राप्त हुई थी । ये जादी अमूल्य है क्योंकि इस आजादी में हमारे असंख्य भाई-बन्धुओं का संघर्ष, त्याग तथा बलिदान समाहित है । ये आजादी हमें उपहार में नहीं मिली है । वंदे मातरम् और इन्कलाब जिंदाबाद की गर्जना करते हुए लाखों वीर देशभक्त फांसी के फंदे पर झूल गए । 13 अप्रैल 1919 को जालियांवाला बाग हत्याकांड, वो रक्त रंजित भूमि आज भी देशभक्त नर-नारियों के बलिदान की गवाही दे रही है ।

आजादी अपने साथ कई जिम्मेदारियां भी लायी है, हम सभी को जिसका ईमानदारी से निर्वाह करना चाहिए किन्तु क्या आज हम 77 वर्षों बाद भी आजादी की वास्तविकता को समझकर उसका सम्मान कर रहे हैं? आलम तो ये है कि यदि स्कूलों तथा सरकारी दफ्तरों में 15 अगस्त न मनाया जाए और उस दिन छुट्टी न की जाए तो लोगों को याद भी न रहे कि स्वतन्त्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय त्योहार है जो हमारी जिन्दगी के सबसे अहम् दिनों में से एक है ।

एक सर्वे के अनुसार ये पता चला कि आज के युवा को स्वतन्त्रता के बारे में सबसे ज्यादा जानकारी फिल्मों के माध्यम से मिलती है और दूसरे नम्बर पर स्कूल की किताबों में जिसे सिर्फ मनोरंजन या जानकारी ही समझता है । उसकी अहमियत को समझने में सक्षम नहीं है । ट्वीटर और फेस बुक पर खुद को अपडेट करके और आर्थिक आजादी को ही वास्तविक आजादी

समझ रहा है । वेलेण्टाइन डे को स्वतन्त्रता दिवस से भी बड़े पर्व के रुप में मनाया जा रहा है ।

आज हम जिस खुली फिजा में सांस ले रहे हैं वो हमारे पूर्वजों के बलिदान और त्याग का परिणाम है । हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि मुश्किलों से मिली आजादी की रुह को समझें । आजादी के दिन तिरंगे के रंगों का अनोखा अनुभव महसूस करें इस पर्व को भी आजाद भारत के जन्म दिवस के रुप में पूरे दिल से उत्साह के साथ मनाएँ । स्वतन्त्रता का मतलब केवल सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता न होकर एक वादे का भी निर्वाह करता है हम अपने देश को विकास की ऊंचाईयों तक ले जायेंगे ।

भारत की गरिमा और सम्मान को सदैव अपने से बढ़कर समझेंगे । रविन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं से कलम को विराम देते हैं -

हो चित्त जहां भाव-शून्य, माथा हो उन्नत
हो ज्ञान जहां पर मुक्त, खुला वह जग हो
घर की दीवारें बने न कोई कारा
हो जहां सत्य ही स्रोत सभी शब्दों का
हो लगन ठीक से ही सब कुछ करने की
हो नहीं रुढ़ियां रचती कोई मरुस्थल
पाये न सूखने इस विवेक की धारा
हो सदा विचारों, कर्मों की गति फलती
बातें हो सारी सोची और विचारी
हे पिता मुक्त वह स्वर्ग रचाओं इसमें
बस उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा

- संजय शास्त्री, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

युवाओं की आजादी

अमर शहीदों की लहू की, कीमत ही ना जानी है ।
हम आजाद हुए लेकिन, आजादी ना पहचानी है ॥

बचपन आज शहीद हो रहा है, क्रिकेट के मैदानों पर,
और बुढ़ापा खांस रहा है, मदिरा की दुकानों पर,
विलासिता की फिल्म देखने बैठी हुई जवानी है ॥
हम आजाद हुए ...... ॥
मिली सभ्यता बढ़े घरों की, ऊंची एडी पर चलते,
आज नग्नता वक्ष चढ़ी है, गोदी में पलते-पलते,
कितनी आजादी पाई, और कितनी की मनमानी ॥
हम आजाद हुए .... ॥
विद्या की अर्थी होते हैं, कालेजों स्कूलों में,
कफन ज्ञान का दफन हुआ, वर्तमान की मूलों में,
गुरु-गोविन्द नशे में दोनों, बढ़िया नींव रखानी है ॥
हम आजाद हुए .... ॥

मरने के रस्ते-सस्ते, पर राह मिली ना जीने की,
किस्मत भी महंगी पड़ती, आज कीमत घटी पसीने की,
मजदूर की बेटी चिथड़े पहने हुई सयानी है
हम आजाद हुए .... ॥
यौवन की पूंजी पाकर भी, हमने सब कुछ खोया है,
निर्धन को फूटपाथ दिया, पैसा कुर्सी पे सोया है,
यह सब तो पहले भी था, ये झांकी रही पुरानी है ॥
हम आजाद हुए .... ॥
इस आजादी से पहुंचे हम, गहरे और रसातल में,
माटी की कसम अब खायें, तो भारत बदलेंगे पल में,
सुनो सुनाओ ! कदम बढ़ाओं ! मौसम अब तूफानी है ॥
हम आजाद हुए .... ॥

रचियता : **डॉ. वेदप्रकाश व्यास**, व्यास मेडिको, गैरतंग, जिला-रायसेन (म.प्र.)

ज्वलन्त समस्या भारत की आंतरिक समस्या-खालिस्तान

भारत की आन्तरिक समस्या में खालिस्तान की मांग ने सरकार को एक बार फिर से परेशान कर दिया है। जिससे भारतीय जन–मानस की स्मृति में 80 के दशक का उग्रवाद उभर आया है। उस समय की भयावह स्थिति ने देश को बहुत नुकसान पहुँचाया और देश ने बहुत कुछ खोया। खालिस्तान एक बार फिर से भारत के सबसे ज्यादा समृद्धिशाली व वीरो की भूमि पंजाब को उग्रवाद की आग में धकेल रहा है। कुछ शरारती तत्व देश विरोधी ताकतों के साथ मिलकर भारत एवं अन्य देशों में खालिस्तान की मांग को लेकर धरने–प्रदर्शन व तोड़–फोड़ कर रहे हैं। भारतीय दूतावासियों व पूजा स्थलों को भी निशाना बनाया जा रहा है। जो कि बहुत ही निदंनीय एवं जघन्य अपराध है। सरकार को हर संभव कठोरता के साथ उनका दमन करना चाहिए। खालिस्तान की समस्या कोई नई समस्या नहीं है यह ब्रिटिश भारत से लेकर आज तक बनी हुई है। इतिहास के पन्नों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि सन् 31 दिसम्बर 1929 को लौहार के कांग्रेस अधिवेशन में पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 जवाहर लाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज्य की मांग की सभी ने इस प्रस्ताव को पास कर दिया। उसी समय तत्कालीन नेता तारा सिंह ने खालिस्तान की मांग रखी। उसके बाद यह मांग आन्दोलन का रूप लेने लगी। सबसे पहले खालिस्तान की लिखित मांग 1940 में प्रकाशित "खालिस्तान" नामक पुस्तकें में की गई थी। खालिस्तान का मतलब 'खालसे की सरजमीन' है। इसके समर्थकों व सिख अल–अलगावादियों ने अलग सिख राष्ट्र की मांग करनी शुरू कर दी। सिख अलगाववादियों ने जो खालिस्तान रूपी राष्ट्र की मृगमरिचिका की कल्पना की उसमें भारत के पंजाब व राजस्थान का कुछ हिस्सा व पाकिस्तान के पंजाब का कुछ क्षेत्र शामिल किया है। इन तीनों को मिलाकर सिख अलगाववादी खालिस्तान नामक राष्ट्र बनाने का सपना देख रहे है। खालिस्तान का राष्ट्रवाक्य 'अकाल सहाए' अर्थात्' ईश्वर की कृपा से' तथा राष्ट्रगान 'देह शिवा बर मोहि इहै' अर्थात् 'हे सर्व शक्तिमान मुझे यह वरदान दो' है। खालिस्तान के समर्थक इसका उद्देश्य बताते है कि जैसे मुस्लिमों के लिए अलग देश पाकिस्तान बना है। उसी प्रकार सिखों के लिए भी अलग खालिस्तान होना चाहिए।

उसी प्रकार की भावनात्मक भावनाओं को भड़का कर कुछ सिख अलगाववादियों ने इस आन्दोलन को चलाया है। तारा सिंह द्वारा भड़कायी इस चिंगारी ने 80 के दशक आते–आते विकराल रूप धारण कर लिया। खालिस्तान उग्रवाद 1984 में अपने चरम पर था। पंजाब में खालिस्तान के समर्थकों ने ताण्डव मचा रक्खा था। उस समय खालिस्तानी नेता भिंडरावाले ने जनता को भड़काया और आन्दोलन को उग्र रूप दे दिया। उसने इस आन्दोलन को धार्मिक रूप देने का प्रयास किया। उसने सिखों के प्रमुख तीर्थ स्थल स्वर्ण मन्दिर पर कब्जा कर लिया। स्वर्ण मन्दिर से अलगाववादियों को बाहर निकालने के लिए 1 जून 1984 से 10 जून 1984 तक सेना द्वारा ऑपरेशन ब्लूस्टार चलाया गया। इसमें भिंडरा वाले सहित अलगाववादी मार गिराये गये। उसके बाद भी खालिस्तान की मांग करने वालो के खिलाफ ऑपरेशन बुडरोज–जून–सितम्बर 1984, ऑपरेशन शुद्धिकरण–1984 तथा ऑपरेशन ब्लैक थंडर–ए

30 अप्रैल 1984 एवं ऑपरेशन ब्लैक थंडर–II–9 मई 1988 को चलाया गया। भारत की सरकार ने पंजाब में अलगाववाद की आग को बुझाने का प्रयास तो किया परन्तु कुछ स्वार्थी तत्वों ने उस अलगाववाद की आग को जलाये रखा। पंजाब की इस आग को बुझाने में भारत को बहुत कुछ खोना पड़ा है जिसकी भरपाई करना असंभव है। ऑपरेशन ब्लूस्टार के बदले में सिख कट्टरपंथियों ने 31 अक्टूबर 1984 की सुबह श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री की हत्या कर दी। 23 जून 1985 को एयर इंडिया के विमान को बम से उड़ा दिया जिसमें 329 लोग मारे गये। 10 अगस्त 1986 को 13वें पूर्व थल सेनाध्यक्ष जनरल ए0एस0 वैद्य की हत्या कर दी गयी, इसके साथ ही 31 अगस्त 1995 को तत्कालीन सीएम बेअंत सिंह की भी हत्या कर दी गयी। खालिस्तान के उग्रवादियों ने भारत एवं पंजाब को बहुत कष्ट दिये हैं जिन्हें अब समाप्त करने का समय आ गया है। खुद को वारिस पंजाब के संगठन का प्रमुख बताने वाले अमृतपाल ने एक बार फिर से खालिस्तान उग्रवाद को बढ़ावा दिया है। उसका स्पष्ट कहना है कि **"मैं खुद को भारतीय नहीं मानता, मेरे पास जो पासपोर्ट है ये मुझे भारतीय नहीं बनाता, ये यात्रा करने के लिए बस एक कागज भर है।"** इस प्रकार अलगाववाद की खुलेआम बात करने वालों को सरेआम शूली पर चढ़ा देना चाहिए। देश की एकता और अखण्डता के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। आज विश्व के कई देशों में खालिस्तान समर्थकों ने भारतीय दूतावास व हिन्दू पूजास्थलों को निशाना बनाया है। कई स्थानों पर तो भारतीय तिरंगे का भी अपमान किया गया है। सरकार को सख्ती के साथ इन कुछ मुट्ठीभर खालिस्तानियों से निपटना चाहिए। साथ ही सरकार को कनाड़ा, लंदन, आस्ट्रेलिया, अमेरिका में अभिव्यक्ति के के नाम पर हो रहे खालिस्तान के प्रदर्शनों पर रोक लगाने के लिए दबाव बनाना चाहिए। आज भारत विश्व की बढ़ती अर्थव्यवस्था है। इस प्रकार के आन्दोलनों से भारत की छवि खराब होती है। जो भी संगठन व देश इस उग्रवाद को बढ़ावा एवं आर्थिक मदद दे रहे है, उनके खिलाफ भी कार्यवाही सरकार को करनी चाहिए। पंजाब सीमावर्ती राज्य होने के कारण बहुत ही संवेदनशील है। इसलिए राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार को मिलकर सटीक, ठोस एवं कारगर रणनीति बनाकर कठोर कार्यवाही करनी चाहिए। सख्त कार्यवाही एवं विदेशों के साथ कूटनीतिक वार्ता ही इस समस्या का समाधान है। सेवा एवं देशभक्त की पर्यायवाची सिख कौम को खालिस्तान के उग्रवादियों के बहकावे में आने की जरूरत नहीं है। भारत में खालिस्तान बनाने का सपना देखने वालो को यह समझ लेना चाहिए कि यह सपना ही उनकी मौत का निमंत्रण है। पंजाब भारत का अभिन्न अंग था है और हमेशा रहेगा। जय हिन्द जय भारत

सोमेन्द्र सिंह, रिसर्च स्कॉलर, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

ई–मेल: somandrashree@gmail.com

इंसान का अपना क्या है?

घमंड किस बात का..!

जन्म ☛ दूसरे ने दिया
नाम ☛ दूसरे ने रखा
शिक्षा ☛ दूसरे ने दी
रोजगार ☛ दूसरे ने दिया
इज्जत ☛ दूसरे ने दी।

पहला और आखिरी स्नान दूसरे कराएंगे
श्मशान दूसरे ले जायेंगे
मरने के बाद संपति दूसरे बांट लेंगे
फिर भी घमंड किस बात पर करते है लोग।

तात्विक

"तन्मयता से श्रवण का परिणाम"

- डॉ. ज्ञानप्रकाश शास्त्री, सेवानिवृत्त
प्रोफेसर कांगड़ी विश्वविद्यालय

एक बड़ा दानी था उसका नाम था, अनाथपिंडक। वह अनाथों का बड़ा सहारा था। देता तो लोगों को दिल खोलकर देता। उसके घर काल नाम का एक पुत्र था। अनाथपिंडक बुद्ध को सुनने वाला, लेकिन काल कभी बुद्ध को सुनने न जाता था। काल शब्द भी बडा अच्छा। अनाथपिंडक का मतलब होता है देने वाला, दान देने वाला, अनाथों को सनाथ कर दे जो। और काल का अर्थ होता है, समय या मौत। न तो समय बुद्ध को सुनने जाना चाहता है और न मौत, क्योंकि दोनों बुद्ध से डरते हैं।

समय तो क्षणभंगुर है, शाश्वत के पास जाने में घबड़ाता है। और मौत भी जीवन के सामने जाने में घबड़ाती है। तुम तो मौत के सामने जाने में घबड़ाते हो, बुद्ध पुरुष के सामने मौत आने में घबड़ाती है। ये तो प्रतीक हुए नाम के।

बाप लेकिन चाहता था कि बेटा जाए बुद्ध को सुने। लेकिन बेटा सुनता नहीं था। तो बाप ने कहा ऐसा कर मैं तुझे सौ स्वर्ण मुद्रायें दूंगा, अगर तू बुद्ध के वचन सुनने जाए। इस लोभ में वह गया।

तुम ख्याल रखना, पहली दफे जब तुम धर्म की तरफ आते हो, तो तुम लोभ में ही आते हो। लोभ किसी तरह का हो, कि चलो मन को थोड़ी शांति मिलेगी, अशांति से छुटकारा होगा, कि थोड़ा आत्मविश्वास बढ़ेगा, कि जीवन में सफलता शायद इस तरह से मिल जाए, कि दुकान तो चलती नहीं शायद ध्यान करने से चल जाए, क्योंकि लोग कहते हैं कि ध्यान करने से परमधन मिलता है, तो यह तो छोटा-मोटा धन है, यह तो मिल ही जाएगा, ऐसे ही हजार-की बीमार रहती तबियत शायद ध्यान करने से ठीक हो जाए, कि पति-पत्नी की बनती नहीं तो सोचते है, चलो ध्यान कर लें, शायद बनने लगे, कुछ ऐसे लोभ से आदमी आता है।

तो गया बेटा बुद्ध को सुना लौटकर आया आते ही उसने कहा कि सौ स्वर्ण मुद्राएँ ? पीछे भोजन करूंगा, क्योंकि मुझे भरोसा किसी का नहीं। पहले स्वर्ण मुद्राएँ गिनवा लीं, तब भोजन किया। वह तो गया ही उसके लिए था। उसको बुद्ध को सुनने से मतलब थोड़े ही था। वह तो जब बुद्ध को सुन रहा होगा, तब भी मुद्राएँ गिन रहा होगा। सोच रहा होगा कि बाप देगा कि नहीं देगा कि चालबाजी की है, ऐसे ही बहाना कर दिया है कि इसी बहाने भेज दिया।

दूसरे दिन बाप ने कहा कि अब हजार स्वर्ण मुद्राएँ दूंगा, लेकिन शर्त एक है कि सुनना काफी नहीं जो सुनो उसे याद भी रखना और मेरे सामने आकर दोहराना हजार मुद्राएँ तो बेटा गया, लेकिन वहां जाकर डुबकी खा गया।

वह याद रखने में गड़बड़ हो गयी। गौर से सुनना पड़ा, याद रखना था। ध्यान से सुनना पड़ा, गुन-गुनकर सुनना पड़ा कि एक भी बात चूक न जाए, नहीं तो बाप भी पक्का बाप है, वह एक हजार स्वर्ण मुद्राओं में काट लेगा-इतना याद नहीं रहा। इतने गौर से सुना, ध्यान से सुना-भूल ही गया स्वर्ण मुद्राओं को उस भाव में डुबकी खा गया।

आया ही नहीं घर सांझ हो गयी बाप भागा आया कि मामला क्या है ? वह आँखे बंद किए बैठा था, अरे बाप ने कहा घर चल। उसने कहा सुन लिया अब कहां आना और कहां जाना ? बाप ने कहा एक हजार मुद्राएँ तेरी प्रतीक्षा कर रही है, उसने कहा वह अब आप ही सम्हालकर रख लो और ये सौ भी जो कल दी थी, वापस ले जाओ।

बाप तो बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि बुद्ध को

बहुत सुनता था, उसकी बात मानकर दान भी करता था, लेकिन ऐसा नहीं सुना था जैसा इस बेटे ने सुन लिया।

अक्सर ऐसा होता है कि जवानी जो सुन सकती है, बुढ़ापा नहीं सुन सकता। युवा मन जो सुन सकता है वृद्ध मन नहीं सुन सकता। थक गया होता है या जानकारी की इतनी पर्तें इकट्ठी हो गयी होती है, ताजा मन जो सुन सकता है, वह बूढ़ा मन नहीं सकता। बाप ने बहुत समझाया लेकिन उसने कहा अब छोड़ो पिंड तुम यही तो चाहते थे, सो हो गया। बाप ने कहा यह जरा ज्यादा हो गया। मैंने इतना चाहा था कि सुन लेगा लौट आएगा थोड़ा समझदार हो जाएगा धार्मिक हो जाएगा, प्रतिष्ठित हो जाएगा, मगर यह जरा ज्यादा हो गया, तेरा क्या इरादा है ? उसने कहा अब क्या इरादा है बात खत्म हो गयी। अब हम बुद्ध के हैं। बात उतर गयी।

बाप ने बुद्ध को कहा कि यह मामला क्या है? मैं जन्म से सुन रहा हूं और इस आदमी ने दो ही बार सुना है और यह भी किसी और कारण से सुना है, पैसा पाने के लिए बुद्ध ने कहा तुम्हारा बेटा अब तुम्हारा नहीं मेरा हो गया। जिसने मुझे सुन लिया मेरा हो गया। अब यह बेटा मेरा है अब यह तुम दावा जाने दो। अब उसे तुम चक्रवर्ती सम्राट की संपत्ति भी दो तो भी लौटने वाला नहीं, तुम उसे देवलोक का सम्राट बना दो, इंद्र बना दो तभी लौटने वाला नहीं। तुम तीनों लोकों की सारी संपदा उसके चरणों में रख दो तो भी लौटने वाला नहीं तो बाप ने कहा इसे क्या हो गया है? तो बुद्ध ने कहा यह स्रोतापन्न हो गया। यह ध्यान की सरिता में उतर गया है।

इस घड़ी बुद्ध ने यह गाथा कही –

पथव्या एकरज्जेन सग्गस्स गमनेन वा।
सब्बवलोकाधिपच्चेन सोतापत्तिफलं वरं ॥

पृथ्वी का अकेला राजा होने से, या स्वर्ग के गमन से, अथवा सभी लोगों का अधिपति बनने से भी स्रोतापति-फल श्रेष्ठ हैं।

पेड़ों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

1. पेड़ धरती पर सबसे पुराने जैविक अवयवी (Living organism) हैं और ये कभी भी ज्यादा उम्र की वजह से नहीं मरते।
2. हल साल पांच अरब पेडड़ लगाए जा रहे हैं लेकिन हर साल दस अरब पेड़ भी जा रहे हैं।
3. एक पेड़ दिन में इतनी ऑक्सीजन देता कि चार आदमी जिंदा रह सकें।
4. देशों की बात करें, तो दुनियां में सबसे ज्यादा पेड़ रुस में हैं, इसके बाद कनाडा में उसके बाद ब्राजील में फिर अमेरिका में और उसके बाद भारत में केवल 35 अरब पेड़ बचे हैं।
5. दुनिया की बात करें तो एक इंसान के लिए 422 पेड़ बचे हैं, लेकिन अगर भारत की बात करें तो एक हिन्दुस्तानी के लिए सिर्फ 28 पेड़ बचे हैं।
6. पेड़ों की कतार धूल-मिट्टी के स्तर 75 प्रतिशत तक कम कर देती है और 50 प्रतिशत शोर कम करती है।
7. एक पेड़ इतनी ठंड पैदा करता है जितनी 1 ए.सी. 10 कमरों में 20 घंटों तक चलने पर करता है, जो इलाका पेड़ों से घिरा होता है वह दूसरे इलाकों की तुलना में 9 डिग्री ठंडा रहता है।
8. पेड़ अपनी 10 प्रतिशत खुराक मिट्टी से और 90 प्रतिशत खुराक हवा से लेते हैं।
9. एक एकड़ में लगे हुए पेड़ एक साल में इतनी सी.ओ. 2 सोख लेते हैं जितनी एक कार 41,000 कि.मी. चलने पर छोड़ती है।
10. दुनिया की 20 प्रतिशत अमेजन ऑक्सीजन जंगलों के द्वारा पैदा की जाती है ये जंगल 8 करोड़ 15 लाख एकड़ में फैले हुए हैं।
11. एक पेड़ का नाम लेना मुश्किल है लेकिन तुलसी, पीपल, नीम और बरगद दूसरों के मुकाबले ज्यादा ऑक्सीजन पैदा करते हैं।
12. दुनिया का सबसे पुराना पेड़ स्वीडन के डलारना प्रांत है, टीजिक्को नाम का पेड़ 9,550 साल पुराना है।
13. बरसात में कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाये।

– अनुज टवानी, 7/9, कनकिया संस्कृति अपार्टमेंट, मुंबई